-: तृतीय अध्याय :-

"गुनाहों का देवता" उपन्यास में पात्र तथा चरित्र-चित्रण

तृतीय अध्याय

"'गुनाहों का देवता' उपन्यास में पात्र तथा चरित्र-चित्रण ।"

धर्मवीर भारती जी का 'गुनाहों का देवता' उपन्यास रोमान्टिक प्रेमकथा है । इस उपन्यास मे सिर्फ डेढ़ साल के अवकाश में घटित घटनाओं को कई पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है । उपन्यासकार ने व्यक्तिवादी स्तर पर पात्रों के आन्तरिक आवेशों और व्यथाओं का सुक्ष्म और विस्तृत वर्णन किया है । पात्रों के हास्य-अश्रु, घृणा-विस्मय, सुख-दु:ख, ईर्ष्या-श्रध्दा और पीड़ा आदि के बड़े ही यथार्थ एवं प्रभावोत्पादक चित्र अंकित किये हैं ।

आज प्रेमकहानी कहना कोई गुनाह नहीं है, गुनाह वही होगा जब वह प्रेम जीवन से न जुड़ जाएगा तथा आज के मानवीय सम्बन्धों को किसी-न-किसी रूप में न खोलता होगा । पूरे उपन्यास को पढ़नेपर यह लगता है कि, इस उपन्यास का नायक चन्दर और सुधा के प्रेम में समाज कहीं भी बाधक नहीं है । बाधा अगर कहीं है, तो वह स्वयं इन्हीं प्रेमी पात्रों के द्वारा ओढ़ी हुई भावुकता, काल्पनिकता और स्वर्गीय नैतिकता की ।

"भारती जी के उपन्यासों में पाश्चात्य प्रभावयुक्त पात्रों का आधिक्य मिलता है । साथ ही उनमे चरित्रांकन का रूपवैविध्य भी देखने को मिल जाता है ।"[१] भारती जी ने इस उपन्यास में जिन पात्रों का चित्रण किया है, उन्हीं के माध्यम से वे अपने उद्देश्य तक पहुँचने में सफल हुए है । हर एक पात्र का निर्माण लेखक ने किसी-न-किसी उद्देश्य से ही किया है । इस उपन्यास के पात्रों के सही-सही चरित्रांकन के लिए हमें उन सभी पात्रों को निम्नलिखित वर्गों में या कोटियों में विभाजित करना आवश्यक है --

---

१. डा. कैलाश जोशी – 'धर्मवीर भारती का उपन्यास साहित्य' – पृ. २८ ।

महत्व के आधारपर --

१. प्रमुख पात्र - नायक चन्दर, नायिका सुधा, पम्मी ।

२. सहायक पात्र - बिनती, बर्टी, डा. शुक्ला, बुआ, गेसू ।

३. गौण पात्र - कैलाश मिश्र, शंकरबाबू, बिसरिया, अख्तर ।

४. खल पात्र - बर्टी ।

५. नामनिर्देशित पात्र- ठाकूर साहब, दुबे जी , महाराजिन, सार्जेण्ट, बर्टी की बेटी रोज, बर्टी की दूसरी पत्नी जेनी, साबिर हुसैन काजमी, पम्मी के पति जिनका नाम नहीं दिया गया, हसरत, फूल आदि ।

उपन्यास की घटनाओं में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करनेवाले जो पात्र हैं वे प्रमुख पात्र है । सहायक पात्र प्रमुख पात्रों के कार्यों में उनकी मदद करनेवाले पात्र हैं। नामनिर्देशित पात्र वे पात्र हैं जिनका सिर्फ उल्लेख आया है । उनके द्वारा कोई महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न नहीं हुआ है ।

स्वरूप के आधार पर --

१) आदर्शवादी - इस उपन्यास की नायिका 'सुधा' एक आदर्शवादी पात्र है । वह अपने प्यार की एकनिष्ठता के लिए अपनी जान कुर्बान कर देने की तैयारी रखती है । जब धोखे से उसे उसका प्रेमी चन्दर किसी और से शादी के लिए तैयार करता है तब भी वह अपने पति के प्रति पूरी तरह से समर्पित नहीं हो पाती । वह चन्दर के प्रति अपने एकनिष्ठ आदर्शवादी प्रेमपर न्योच्छावर हो जाती है । बिनती भी एक आदर्शवादी पात्र है ।

२) व्यक्तिवादी - इस उपन्यास का हर पात्र व्यक्तिवादी दिखाई देता है । डा. एन.के.जोसफ लिखते है - "'गुनाहों का देवता'के पात्र 'व्यक्ति' हैं। पात्रों के लगाव, उलझन, समस्याएँ, तनाव, द्वन्द्व सब व्यक्तिपरक हैं। इस उपन्यास के पात्र

सशक्त हैं। उनका व्यक्तित्व प्रखर एवं प्रभावशाली है, एक-एक पात्र की चरित्रगत विशेषताओं को भारती ने बड़ी कुशलता से उभारा है।" [१]

३) सामाजिक - इस उपन्यास में सुधा की बुआ, बिनती और कुछ मात्रा में डा. शुक्ला ऐसे पात्र हैं, जो सामाजिक पात्र कहे जा सकते हैं।

४) प्रतीकात्मक - इस उपन्यास की नायिका सुधा एक आदर्श प्रेमिका का प्रतीक है। पम्मी वासना का, बर्टी पागलपन का, बुआजी समाज की रूढ़ी-परम्पराओं का प्रतीक है।

५) मनोविश्लेषणात्मक - इस उपन्यास में पात्रों के विशेषकर चन्दर के मानसिक द्वन्द्व को अभिव्यक्त करने में उपन्यासकार की काव्यमयी भाषा अत्यंत मार्मिकता के साथ व्यक्त किया है। सुधा, बर्टी, पम्मी आदि के मनोविश्लेषण में भी लेखक सफल रहा है।

इस उपन्यास में पात्रों के चरित्र-चित्रण के लिए उपन्यासकार ने निम्नलिखित विधियाँ अपनाई है --

१. विश्लेषणात्मक - चन्दर तथा सुधा के आंतरिक विश्लेषण के लिए कई जगहोंपर उपन्यासकार ने विश्लेषणात्मक विधि अपनायी है। इस विधि के द्वारा उपन्यासकार ने उन दोनों के अंतर्मन को खोलकर पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है।

२. आत्मकथात्मक - गेसू की जब चन्दर से पहली बार मुलाकात हो जाती है तो गेसू अपनी आपबीती चन्दर को सुनाती है। यहाँ हम आत्मकथात्मक विधि देख सकते है।

३. आत्मविश्लेषणात्मक - चन्दर का आइने के सामने खड़े होकर स्वयं को कोसना आत्मविश्लेषण का अच्छा उदाहरण है।

---

१ डा. एन.के. जोसफ -'हिन्दी उपन्यास में व्यक्तिवादी चेतना'- पृ.१३४।

४. संवादात्मक - कई जगहोंपर संवादात्मक विधि का इस्तमाल करते हुए भारती जी ने पात्रों का चरित्र-चित्रण किया है। जैसे - सुधा की शादी तय हो जाने के बाद चन्दर जब उसे समझाने लगता है तो उन दोनों के बीच का संवाद सुधा के आंतरिक विश्लेषाण में सहायक है। बर्टी की मनोवैज्ञानिकता को जानने के लिए, उस के पागलपन को समझाने के लिए हमें उसके और चन्दर के संवाद ही देखने होंगे।

इस प्रकार कई विधियों का प्रयोग कर लेखक ने पात्रों की मनस्थितियों को, उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। इसी के आधार-पर अब हम एक-एक पात्र के चरित्र की विशेषताएँ देखेंगे :--

प्रमुख पात्र --

चन्दर --

धर्मवीर भारती के हर एक पात्र की अपनी निजी विशेषताएँ हैं और उनके आयाम अलग-अलग हैं। इस उपन्यास का नायक चन्दर कपूर एक अत्यंत भावुक व्यक्ति है। बचपन मे सौतेली माँ से झगड़कर वह प्रयाग आ गया और उसके कॉलेज के सिनीयर लेक्चरर डा. शुक्ला की मदद से उनके साथ रहने लगा और अर्थशास्त्र में एम. ए. कर रिसर्च शुरु की। वह उनकी बेटी सुधा से बेहद प्यार करता है। चन्दर के जीवन में सुधा के स्नेह की झिड़कियाँ, झगड़े और विवशताएँ जुड़ी हुई है। "सुधा चन्दर का एक सुनहरा सपना है जिसे चन्दर ने अपने-हृदय की अंतरंग परतोंमें सँवारकर रखा है।"[१] चन्दर सिर्फ सुधा को पूजता है क्योंकि वह उसके प्यार की निशानी है, लेकिन चन्दर का सपना सिर्फ सपना रह जाता है क्योंकि जिसे वह अपनाना चाहता था, वह किसी कारणवश दूसरे की पत्नी हो जाती है, अर्थात् सुधा की शादी कैलाशबाबू से हो जाती है। सुधा केविवाह के पश्चात् चन्दर उसके विरह में तड़पने लगता है। सुधा उसके जीवन से दूर जाती है फिर भी चन्दर को वह दूर नहीं लगती। उसकी सुधा का स्थान हृदय से हटकर अब नेत्र केपलकों में आ जाता है।

---

१ डा. कैलाश जोशी -'धर्मवीर भारती उपन्यास साहित्य'- पृ. २८।

चन्दर के जीवन में सुधा के सिवा और भी लड़कियाँ आ जाती हैं जैसे प्रमिला डिक्रूज, बिनती आदि। प्रमिला और सुधा में जमीन-आसमान का अंतर है। प्रमिला उसकी सिर्फ सहेली है, समय बीताने का एक साधन है। चन्दर का तन-मन-धन अपनी प्रेमिका सुधा की ओर है। चन्दर का प्रेम सुधा के लिए निःस्वार्थ है। इसके साथ ही उसके जीवन में बिनती भी आ जाती है। उसे भी वह दिल से नहीं अपनाता, लेकिन - "वह रोज शाम को आता और बिनती से सुधा की बातें करता, जानें कितनी बातें, जानें कैसी बातें और बिनती के माध्यम से सुधा में डूबकर चला आता था।" [१] बिनती में सुधा को ढूँढने का वह प्रयास करता। चन्दर के मन-मानस की देवी सुधा बनी हुई थी जिससे कुछ समय के लिए बर्टी के बहलावे में आकर वह रूठ गया था लेकिन गेसू के झकझोरने के बाद वह जग जाता है और सुधा से माफी माँग लेता है।

उसके व्यक्तित्व का प्रभाव सभी पर पड़ता है, यहाँ तक कि सुधा के घर की महाराजिन तक उसके गुणगान करती है और सुधा से भी ज्यादा चन्दर को चाहती है। वह कॉलेज जीवन से अनाथों की तरह रह रहा है फिर भी उसके प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण उसे कई दोस्त हैं। वह सहशिक्षा का कट्टर विरोधक है और उसे लडकियों की आजादी पसंद नहीं है।

पढ़ाई में उसकी इतनी रुचि है कि, वह सुधा की साड़ी का डिजाइन बनाने के लिए लेता तो है पर उसपर श्रीलंका का नक्शा बना देता है और उसमें इतनी एकाग्रता है कि, थीसिस पूरी होने तक उसका कहीं और ध्यान नहीं लगता है। कागज और पेन लेकर वह घण्टों बैठा लिखा करता है। इसके साथ ही उसे कविता में भी रुचि है। अन्य जिन बातों में उसे रुचि है, उनका सिर्फ उल्लेख आया है। जैसे - उसे बोटिंग पसंद है, उसे चाय बेहद पसंद है आदि।

---

१ डा. धर्मवीर भारती - 'गुनाहों का देवता' - पृ. १९६।

12826
A

वह डा.शुक्ला के प्रति कृतज्ञ है। हरदम यह उसे याद रहता है कि, डा.शुक्ला ने उसके लिए इतना कुछ किया हैं और वे उसे बेटे से भी बढ़कर मानते है। वह ठाकुरसाहब से कहता भी है -- "यार ,तुम तो जानते हो कि मेरा उनसे कितना घरेलू सम्बन्ध है। जब से मैं प्रयाग में हूँ, उन्हीं के सहारे हूँ और फिर आजकल तो उन्हीं के यहाँ पढ़ता-लिखता भी हूँ।"[1] सुधा को अपनी इच्छा के विरुध्द शादी के लिए चन्दर ही तैयार कर देता है फिर बाद में पछताता भी है। बर्टी और पम्मी के विचारों में लोकर वह सुधा को झिड़कियाँ देता है लेकिन फिर सुधा से माफ़ी भी माँग लेता है।

सुधा के विवाह के बाद चन्दर प्रमिला स्क्रूज की ओर झुकता है लेकिन सुधा के खो जाने का और प्रमिला से सम्बन्ध प्रस्थापित करने का उसे पश्चाताप हो जाता हैं अर्थात् जो चन्दर सुधा का देवता था, वह देवता न रहकर 'गुनाहों का देवता' बन जाता है। कैलाश जोशी ने लिखा है -- "शायद भारती जी ने चन्दर को नाबालिग दृष्टि से देखकर बुध्दि के परिष्कार का परिचय देना चाहा है। हम यदि सामान्य दृष्टि से देखें तो चन्दर-सुधा से सर्वस्व प्यार करता है और सुधा के विवाह के पश्चात् वह प्रमिला स्क्रूज की ओर झुकता चला जाता है। उसका दिमाग अब उसे ही झकझोरने लगा है अत: वह देवता न रहकर 'गुनाहों का देवता' बन गया है।"[2] सुधा, बिनती और पम्मी तीनों ने ही उसे देवता माना है।

इसके साथ ही वह घोर-व्यक्तिवादी भी है। गेसू के द्वारा उसे झकझोरने पर उसकी आत्मा ने उससे कहा -- "मैं यह नहीं कहता कि, तुम इमानदार नहीं हो, तुम शक्तिशाली नहीं हो। लेकिन तुम अन्तर्मुखी रहे, घोर व्यक्तिवादी रहे, अहंकार ग्रस्त रहे।"[3] चन्दर द्विधा मनस्थिति का शिकार है। जब उसे पम्मी, बर्टी, बिनती स्त्रियों के बारे में अलग-अलग मत बताते है, तो वह सोच में पड जाता है और उसे कुछ समझ में नहीं आता कि, वह किस विचार को या मत को सही मानें। सुधा जब उसे

---

१ डा.धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ.३।
२ डा.कैलाश जोशी -'धर्मवीर भारती उपन्यास साहित्य'- पृ.३०।
३ डा.धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ.२९१।

बिनतीसे शादी करने के लिए कहती है तो वह साफ इन्कार करता है परंतु बाद में वह उसे अपना लेता है ।

सुधा की मौत हो जानेपर वह एकदम टूट जाता है । उसकी स्थिति का चित्रण लेखक ने इस प्रकार किया है --- "चन्दर शान्त था, पत्थर हो गया था लेकिन उसके माथे का तेज बुझ गया था और वह बूढ़ा-सा लगने लगा था और यह सब केवल पंद्रह दिनों में ।" [१]

चन्दर शरारती भी है । वह सभी के साथ शराफत से पेश आता है । पहले तो वह पम्मी की वासना में खो जाता है, गिर जाता है परंतु बाद में संभल जाता है और संभलकर फिर अपने उसी स्थान को पाने की कोशिश करता है । अन्त मे वह बिनती को अपनाकर अपने सहृदय होने का उदाहरण प्रस्तुत करता है ।

हम देखते है कि , चंदर की सभी दुर्बलताएँ सुधा के संदर्भ में नहीं उठती क्योंकि सुधा का सामाजिक स्तर बहुत उँचा है । बिनती के सामने वह एक सामान्य पुरुष की भूमिका में आ जाता है और सुधा के बलिदान के बाद सामाजिक विद्रोह का दूसरा चरण अर्थात चन्दर और बिनती का सांकेतिक विवाह होता है ।

"इस प्रकार सौन्दर्य ,प्रेम, विश्वास, दायित्व और नैतिकता के इस नायक की कथा यात्रा कुण्ठा, विक्षोभ, अस्वीकार, तनाव, टूटन की राहों से अंत में एक अपेक्षित समपर पहुँचती है ।" [२]

इस प्रकार चन्दर जो इस उपन्यास का नायक है देवता से नीचे गिरकर 'गुनाहों का देवता' बन जाता है । वहीं बाद में उपर उठकर उपन्यास को उद्देश्य की ओर ले जाता है । यद्यपि उपन्यासकार ने नायक के व्यक्तित्व में पहले अपकर्ष दिखाया है, तथापि अंत में उसे उत्कर्ष के मार्ग की ओर अग्रेसर होते हुए भी दिखाया है । इसलिए हम कह सकते हैं कि, इस उपन्यास को उद्देश्यतक पहुँचाने के लिए चन्दर एक महत्वपूर्ण चरित्र है ।

---

१ डा. धर्मवीर भारती - 'गुनाहों का देवता' - पृ. ३४९ ।

२ डा. विवेकी राय - 'हिन्दी उपन्यास उत्तर शती की उपलब्धियाँ' - पृ. १५० ।

सुधा --

सुधा इस उपन्यास की नायिका है और डा.शुक्ला की बेटी के रूप में हम उसका परिचय आरंभ में प्राप्त करते हैं। वह चन्दर से बेहद प्यार करती है। तीन वर्ष की आयु में माँ की मौत के कारण उसने गाँव में अपनी बुआ के पास सातवी कक्षा तक पढ़ाई प्राप्त की और शहर में आकर शुक्लाजी के पास रहने लगी। जब वह गाँव से आयी तो बहुत ही शर्मीली,भोली,अल्हड़,जिद्दी,शरारती,नटखट थी। लेकिन बाद मे -"चन्दर ने अक्सर सुधा को डाँटा था,समझाया था और घर-भर में अल्हड पुरवाई और विद्रोही झोंके की तरह तोड़-फोड़ मचाती रहनेवाली सुधा, चन्दर के आँसुओं के इशारोंपर सुबह की नसीम की तरह शान्त हो जाती थी।"[१] फिर वह इतनी ढीठ होती जाती है कि,चन्दर से झागड़ने लगती है। नारी की एकनिष्ठ सम्पूर्ण समर्पण,पुरुष्ा के अन्तरानुशासन में अपने को सौंप देना, पुरुष्ा के गुस्से-नाराजगी की परवाह में घटना और उससे अलग होते तड़पना कोई सिखाता नहीं। वह चन्दर से झागड़ती ,गुस्सा होती,प्यार जताती,अधिकार दिखाती,रौब जमाती लेकिन उसे गुस्से में देख तड़प उठती है। 'क्या करें' यह उसकी समझ मे नहीं आता है। उसने अपने पापा से प्राप्त किया सारा प्यार वह चन्दर पर उँड़ेल देती है।

सुधा और चन्दर के सम्बन्ध निश्चल है,वह चन्दर का हर कहना मानती है और मन की हर बात चन्दर को कहती है। उनका यह अनुराग स्वाभाविक रूप से अंकुरित होता रहता है। ईश्वर भी चाहे तो सुधा - चन्दर एक दूसरे को छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। इन दोनों के प्लेटोनिक प्रेम में लेशमात्र भी वासना नहीं है।

सुधा कॉलेज जीवन में कल्पना लोक में विचरण करती थी। उसकी सहेली गेसू भी उससे कहती है कि,पहले वह हँसती-बोलती थी लेकिन आज-कल वह खोयी-खोयी सी ही रहती है। सुधा चन्दर से कहती है कि,"चन्दर तुम ब्याह मत करना। तुम इसके लिए नही बने हो। तुम्हें मेरे प्राणों की सौगंध है। तुम अपने को बिगाड़ना मत। तुम्हारे जीवन का आदर्श बहुत ऊँचा है।"[२] चन्दर के आग्रह पर

---

१ डा.धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ.१०-११।

२ वही वही पृ.२२५।

सुधा कैलाश से शादी के लिए तैयार तो हो जाती है परंतु वह मन से उसके प्रति समर्पित नहीं हो पाती । उसके विवाह के बाद वह एकदम टूट-सी जाती है और अपनी देह को कष्ट देती चली जाती है जिससे वह बिमारियों से ग्रस्त हो जाती है । उसका शरीर पति के पास रहता है और मन से वह चन्दर के पास रहती है ।

चन्दर पम्मी के प्यार में फँसकर सुधा को लताड़ता है, फिर भी सुधा चुपचाप सह लेती है और उसे क्षमा कर देती है । लेकिन वह अपने आप को पीड़ा देती रहती है - व्रत धारण कर, पुजा-पाठ कर । और अन्त में इन्हीं बिमारियों में ग्रस्त सुधा का गर्भपात हो जाता है और उसी में वह चल बसती है । परंतु वह अन्ततक चंदर को दिल से चाहती है और उसी के प्यार में डूबी रहती है ।

"सुधा के भोलेपन की सृष्टि अद्भूत है । न वह आधुनिक है न पुरानी, न ग्रामीण न नागरिक, न अपढ़ और न पढ़ी-लिखी, न गढ़ी न तराशी, वह सनातन नारी भाव की नैसर्गिक पुतली है ।" [१] सुधा इतनी भोली थी कि, गेसू जब उससे पूछती है कि, क्या तुम किसी से प्यार करती हो ? तो वह चन्दर से पूछ लेती है और जब चन्दर इन्कार कर देता है तो यह जानकर खुश होती है कि, उसने कभी प्यार नहीं किया ।

सुधा का मन चन्दर में किस प्रकार घुल गया है यह बताते हुए कैलाश जोशी कहते है -- "इसके प्राणों की वही एकमात्र गति है, बुध्दि, नेत्र, वाणी सब मे वही बसा हुआ है। उसका मन चातक की तरह एकमात्र चन्दर की अभिलाषा रखता है । वह चन्दर के स्नेह में ही पलकर बड़ी हुई है और उसका पूरा जीवन चन्दर के स्नेह में ही बीता है ।" [२] इसलिए उसे तब दुःख होता है जब स्त्री के स्पर्श से परेशान हो उठनेवाला चन्दर प्रमिला के वक्ष मे शान्ति की खोज करता है । तब सुधा को अपने स्नेह प्यार का अपमान लगता है । विवाह के पश्चात् चन्दर को आघात लगनेपर सुधा सोचती है कि, वह गुनाहों की राहपर क्यों चल रहा है ? उसे सत्पथपर लाने के लिए प्रायश्चित के रूप में 'जोगिन' जैसा जीवन व्यतीत करती

---

१ डा. विवेकी राय -'हिन्दी उपन्यास-उत्तरशती की उपलब्धियाँ'- पृ. १५१ ।

२ डा. कैलाश जोशी -'धर्मवीर भारती उपन्यास साहित्य' - पृ. ३१ ।

है । नारी के रूप में वह विशुध्द नारी तत्व है । उसे सेक्स से चिढ़ है जो विवाह की अनिवार्य परिणाति है । फलस्वरूप तन से कैलाश की होकर भी मन से कैलाश की न हो सकनेवाली सुधा अपने मन को 'भागवत' और 'मानस' जैसे धर्मग्रन्थों में रमाने का प्रयास करती है । अपने तीक्ष्ण मानसिक संघर्ष में भक्ति पूजा, व्रत का आश्रय लेती है और इसी से गल-गलकर मर जाती है । प्रेम और पति के बीच समझौता वह कभी नहीं मान सकती है और इसलिये उसका एकनिष्ठ समर्पण अग्निपरीक्षा में निरंतर खरा उतरता गया ।

सुधा के लिए यह सोचना गलत है कि, उसमें अतिरिक्त भावुकता है क्योंकि, प्रेम नापने और तौलने की वस्तु नहीं है, इसमें तो भावना का ही महत्व होता है । इस प्रकार सुधा एक ऐसा व्यक्तित्व है जो चन्दर के प्रति भावनिक तौरपर पूर्ण समर्पित है और चन्दर की प्राप्ति के लिए वह मौत को भी गले लगाने को तैयार है और अंत में जाकर वह मौत को गले लगा ही लेती है । इस प्रकार सुधा का चरित्र अपने ढ़ंग का एक अनोखा मौलिक चरित्र है ।

प्रपिला डिक्रूज --

प्रपिला डिक्रूज उर्फ पम्मी डा. शुक्ला की एक इसाई छात्रा है जो टाइपिंग करना जानती है । डा. शुक्ला ने एक बार अपने व्याख्यान को टाईप करवाने के लिए चन्दर को उसके पास भेजा और वहीं उपन्यास में उसका परिचय हमें मिलता है । पम्मी के नाना टेनाली डिक्रूज पुरातत्ववेत्ता थे जिन्होंने कोशाम्बी में खुदाई करवाई थी । पम्मी विवाहित है और तलाक के बाद उसके पति आर्मी में रावलपिण्डी में रहते है । उसका भाई बटी पत्नी की मौत के कारण पागल बन गया है ।

पम्मी आकर्षक व्यक्तित्ववाली लड़की है । उसका परिचय लेखक ने इस प्रकार दिया है -- "वह तेइस बरस की दुबली-पतली तरुणी है । लहराता हुआ बदन, गलेतक कटे हुए बाल । ऐंग्लो इण्डियन होने के बावजूद गोरी नहीं है । चाय की तरह वह हल्की, पतली, भूरी और सुर्ख थी ।" [१] पम्मी एकाग्रता के साथ काम करती है । वह घण्टों बिना टाईपरायटर को रोके टाईप कर सकती है । वह मेहनती है ।

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ. २२ ।

पम्मी तलाक के बाद चार साल तक किसी से मिली-जुली नहीं है। अकेली रहती है और चन्दर को देखकर ही उसके मन में एक विश्वास पैदा हो जाता है। इसलिए उसने चन्दर को अपना दोस्त बना लिया है। भाई के साथ रहने की वजह से वह बेतकल्लूफ़ है। वह हर एक के साथ बेतकल्लूफ़ी से ही पेश आती है। वह सिगरेट और चाय की शौकिन थी लेकिन चन्दर के खातिर, उसकी दोस्ती की खातिर सिगरेट छोड़ देती है और सुधा से मिलने के पश्चात पम्मी ने कविता पढ़ना शुरु किया जो पम्मी को बिल्कुल पसंद न था।

चन्दर जब पम्मी को सिनेमा देखने ले जाता है तो वह अत्यंत भावुक बनकर उससे सेक्स की बातें करती है, जिससे चन्दर बिचलित हो जाता है लेकिन सुधा से बातें कर वह शान्त हो जाता है। पम्मी जानती है कि, कपूर पूरी तरह से सुधा की ओर खिंचा है, वह उससे प्रेम करता है फिर भी वह चन्दर को प्राप्त करना चाहती है। यहाँ तक कि, सुधा की शादी तय हो जानेपर सुधा जब पम्मी के पास कविताएँ सुनने के लिए आती है, तब पम्मी उससे पूछती है -- "आप कपूर को प्यार तो नहीं करती ? उससे विवाह तो नहीं करना चाहती।"[१] सुधा की दृढ़ता देख पम्मी विचलित हो जाती है और अपने भाई के यहाँ मसूरी चली जाती है।

बर्टी के द्वारा स्त्रियों के बारे में विचार सुनकर चन्दर अंर्तद्वन्द्व के चक्र में उलझ जाता है और सुधा को लताड़ता है, बिनती को ठुकरा देता है और अकेला हो जाता है। पम्मी जब मसूरी से वापस आती है तो वह इस मौके का भरपूर फायदा उठाती है और चन्दर को अपने प्यार में फाँस लेती है। अब चन्दर की शामें पम्मी के यहाँ बीतने लगती है -- "चन्दर सुबह कॉलेज जाता, दोपहर को सोता और शाम को नियमीत रूप से पम्मी को लेकर घूमने जाता।"[२] चन्दर ने स्वयं को अतीत भूलाकर वर्तमान को पम्मी की नशीली निगाहों में डूबो दिया था।

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ. १४८।

२ वही वही पृ. २६५।

पम्मी-चन्दर का संभोग प्रसंग और पाठक के धड़कते अन्तस में अभिशप्त चन्दर की नियति का समीकरण बैठाने लगता है। अब क्या इसकी वापसी संभव है ? लेकिन एक दिन गेसू उसे वर्तमान सत्य का सामना कराती है, उसके विचारों को झंझोड़, देती है। अब चन्दर पम्मी से दूर हटने लगता है। द्वंन्द्वग्रस्त चन्दर के नशे को उखाड़ना पम्मी की पराजय ही है। लेकिन पम्मी को यह बरदाश्त न हुआ। वह सोचने लगती है -- "चन्दर उसकी बाहों में होते हुए भी दूर चला जा रहा है, बहुत दूर। पम्मी की धड़कने अस्तव्यस्त हो गई। उसकी समझ में नहीं आया वह क्या करें। चन्दर को क्या हो गया ? क्या पम्मी का जादू टूट रहा है ?"[१]

इस प्रकार हर बार जब चन्दर असंतुलित होता है, पम्मी के पास चला जाता है और पम्मी उसे बिखरने नहीं देती लेकिन जब पम्मी ने देखा कि, वह इस धूप-छाँह के खेल में असफल हो रही है तो वह चन्दर को छोड़ अपने पति के पास वापस चली जाती है। उसका वापस जाना चन्दर को धोखा देना नहीं है।

इस प्रकार बेतकल्लूफ, स्पष्टवक्ती, सत्य की दुनिया में जीनेवाली, शादी से नफ़रत करनेवाली, वासना की मूर्ति, स्वार्थी पम्मी अंत में हिंदु विवाह की पध्दति को स्वीकृत कर अपने पति के पास चली जाती है। वह अंत तक पाठक के हृदय में अपना अस्तित्व बनाए रखती है। पाठक की सहानुभूति हमेशा उसके साथ रहती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि, इस उपन्यास के मुख्य पात्रों की योजना स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों को परखने के उद्देश्य से हुई है। इन तीन पात्रों के माध्यम से हम स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के कई रूपों को देख सकते हैं और इनके द्वारा लेखक अपने उद्देश्य तक पहुँचने में सफल हो गया है।

सहाय्यक पात्र --

बिनती --

बिनती गाँव की रहनेवाली एक भोली-भाली युवती है। बिनती और सुधा हमउम्र की लड़कियाँ हैं। बिनती अपने माँ के साथ 'विदुषी' परीक्षा का पहला खण्ड

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ. २७७।

देने के लिए गाँव से इलाहाबाद में डा.शुक्ला के यहाँ आ गयी है, जो उसके मामा लगते है। उसके गाँव में विदुषी की परीक्षा का केन्द्र नहीं था इसलिए वह यहाँ आ गई है। तब से लेकर उपन्यास के अंत तक वह छायी रहती है।

लेखक ने चन्दर के माध्यम से उसका परिचय इस प्रकार दिया है -- सुधा जब उसे पकड के ले आयी तो - "वह बेचारी बुरी तरह अस्त-व्यस्त थी। दाँत में आँचल का छोर दबाये हुए थी। बाल की तीन-चार लटे मुँहपर झुक रही थी और लाज के मारे सिमटी जा रही थी और आँखे थी कि,मुस्कराये या रोयें यह तय ही नहीं कर पाती थी।" [१]

बिनती के जन्म के बाद तुरंत ही उसके पिता की मौत हो गई थी,इसलिये उसकी माँ हमेशा उसे लताड़ती रहती थी। हमेशा उसपर गालियाँ बरसाती,गलती न होनेपर भी उसे कोसती रहती थी। बिनती अपनी माँ के ही द्वारा प्रताड़ित या लांछित थी। माँ के इस व्यवहार से वह खूब रोती थी। सुधा उसे समझाती। वह अपनी माँ से तंग आ गई थी। अत: यह सोचकर कि,कुछ तो चैन मिलेगा, वह शादी करना चाहती है और इसी वजह से चन्दर द्वारा उसे चिढ़ाया जाना अच्छा न लगता है।

वह अत्यंत कोमल हृदयी है। किसी ने उसे जरा कुछ कहा कि,वह रो पड़ती है। वह अत्यंत सेवाभावी है। सुधा की शादी में उसने सुबह से लेकर रात तक काम किया। वह सुधा की परछाई के समान है। जहाँ भी सुधा जाती है,बिनती भी वहाँ जरूर जाती है। अगर सुधा दु:खी है तो बिनती भी दु:खी हो जाती है।

बिनती शरारती भी है। वह चन्दर को एक बार चुप देखकर उसपर पानी छिड़क देती है,सुधा को देखने जब शंकरबाबू आये उस दिन आँगन धोते वक्त उसने चन्दर के कपड़ों को छिंटो से तर कर दिया था। इसके साथ ही वह वाकचतुर भी है। बोलने में किसी से भी हार नहीं जाती। बिसरिया ने कवितासंग्रह पर बिनती नाम लिखा देखकर बिनती और चन्दर दोनों मिलकर उसका खूब मजाक उड़ाते हैं। इसके

---

१ डा.धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ.८१।

पहले भी एक बार बिनती ने मास्टर साहब की यह कहकर कि, "लाइए, मिठाई तो विरह रोग और भावुकता में बहुत स्वास्थप्रद होती है।"[१] खिल्ली उड़ाई थी।

उसे शिक्षा में इतनी रुचि है कि, विदुषी परीक्षा का एक खण्ड देने के लिए वह गाँव से शहर आती है और दूसरे खण्ड की परीक्षा भी देती है। ब्याह के टूट जाने के बाद भी वह पढ़ना ही चाहती है। ससूरालवालों के बर्ताव के कारण झगड़े तक नौबत आकर तीन भाँवरों के बाद बिनती का ब्याह टूट जाता है। तब उसे अपने स्वाभिमान का खयाल आता है और वह अपनी माँ से प्रतिवाद करने लगती है। यहाँ तक कि, चन्दर जब उससे अपने गलती के लिए पछतावा प्रकट करता है तब भी वह उससे कहती है -- "आखिर नारी का भी एक स्वाभिमान है, मुझे माँ बचपन से कुचलती रही, मैंने तुम्हें दीदी से बढ़कर माना। तुम भी ठोकरें लगाने से बाज नहीं आये, फिर भी मैं सब सहती गयी। उस दिन जब मण्डप के नीचे मामाजी ने जबरदस्ती हाथ पकड़कर खड़ा कर दिया तो मुझे उस क्षण लगा कि, मुझमें भी कुछ स्वत्व है, मैं इसलिए नहीं बनी हूँ कि, दुनिया मुझे कुचलती रहे। अब मैं विद्रोह करना भी सीख गई हूँ। जिन्दगी में स्नेह की जगह है लेकिन स्वाभिमान भी कोई चीज है और तुम्हें अपनी जिन्दगी में किसी की जरूरत भी तो नहीं है।"[२]

बिनती थोड़ी अंधश्रध्दा भी है। सुधा की शादी तय हो जानेपर एक दिन जब चन्दर को बिनती ने कैलाश का फोटो दिखा दिया तो वह खुश हो गया लेकिन उसके दिल में उथल-पुथल होने लगी। उसने चन्दर से सुधा को फोटो दिखाने की बात कही और चन्दर चुप हो गया तो बिनती एकटक उसकी ओर देखती रही और बाद में बोली - "देख रही हूँ आप की पलकें झापकती है या नहीं। इसलिए कि, मैंने सुना था देवताओं की पलकें कभी नहीं गिरती।"[३]

बिनती चन्दर से प्यार करती है। उसका प्यार नि:स्वार्थी है। वह उससे कुछ पाने की इच्छा नहीं रखती। वह पूरी तरह से समर्पण भावना से युक्त है।

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ. ११९।

२ वही वही पृ. २५८।

३ वही वही पृ. १३१-१३२।

हमेशा वह चन्दर को सही रास्ते पर लाने में प्रयत्नशील है। जब वह पम्मी में खोने लगता है तब भी वह उसे पम्मी के पास न जाने की सलाह देती है। वह चन्दर को कुछ भी करने से रोक नहीं पाती क्योंकि वह उसे 'देवता' मानती है। वह चन्दर से प्यार करती है किन्तु उसे भी प्रकट नहीं होने देती है।

बिनती का श्रध्दालु हृदय दो आदर्श प्रेमियों के बीच व्यवधान बनकर नहीं पड़ना चाहता। यही आकर बिनती के महान त्यागमय भावों के दर्शन होते है। बिनती अपेक्षाकृत एक व्यावहारिक लड़की है और उसका हृदय मानसिक कुण्ठाओं से नितान्त मुक्त है।

इस प्रकार एक नि:स्वार्थ प्रेमिका के रूप में चित्रित बिनती, उपन्यास की एक महत्वपूर्ण पात्र है।

बर्टी --

प्रमिला स्क्रूज का भाई बर्टी है जिसका 'गुनाहों का देवता' उपन्यास में अचानक प्रवेश हो जाता है। चन्दर कपूर जो, डा. शुक्ला का लेख टाईप कराने के लिए आया था, बर्टी के गुलाब के फूलों को छू लेता है तो बर्टी अचानक उसपर झाड़प ड़ालकर चन्दर को जकड़ लेता है। चन्दर अपने आप को छुड़ा लेता है और देखता है कि, "एक बहुत कमजोर, बिमार-सा, पीली आँखोंवाला गोरा उसे पकड़े हुए था।"[१] यही बर्टी है। उसकी पत्नी की मौत की वजह से वह पागल-सा बन गया है।

बर्टी टेनिस का अच्छा खिलाड़ी था। उसकी शादी एक बिशप की भावुक लड़की से हो गई थी। एक दिन बर्टी ने पार्टी में गुस्ताखी की तो वह बिगड़ गई और फिर धीरे-धीरे एक सार्जेण्ट से प्यार करने लगी। बर्टी बिमार रहने लगा। उसकी पत्नी ने बिमारी में बर्टी की सेवा की। वह सार्जेण्ट की बेटी को जन्म देते वक्त मर गई। लेकिन बर्टी उसे अपनी बेटी मानता रहा। पत्नी ने लगाये फूलों की परवरिश वह करता रहा लेकिन उस बेटी को भी साप ने काट खाया। तब से वह पागल हो गया। पहले पम्मी उसके फूल तोड़कर उसके दिल को बहलाती थी

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ.१९।

लेकिन जब से उसने फूल तोड़ना बंद किया, बर्टी का दिल फूलों से उबने लगा । वह सोचने लगा --"अब कोई फूल भी नहीं चुराता, अब वह भी इन फूलों में नहीं मिलती । वह जरूर सार्जेण्ट के साथ जाती है । वह मुझे प्यार नहीं करती, हरगिज नहीं करती ।"[१] वह अत्यंत भावुक है । वह अत्यंत कमजोर भी है लेकिन मसूरी से आने के बाद उसकी तबीयत सुधर जाती है । उसके मन में अपनी पत्नी की मौत के बाद भी पत्नी के प्रति बदले की भावना तीव्र रही है । वह कहता है --"अगर सिनेमा में वह सार्जेण्ट के साथ मिल गई तो ! तो मैं उसका गला घोंट दूँगा ।"[२]

वह इतना डरपोक है कि, चन्दर जब उसे पकड़ने लगता है तो वह रोने लगता है लेकिन बाद में उसी बर्टी को हम शिकारी के रूप में पाते हैं । वह एक मनोवैज्ञानिक चरित्र है । "जीवन के एक मोह ने उसे पागल बना दिया है । वह तोते को मार डालता है और जब उसकी इच्छा होती है फूलों को तोड़-मरोड़ डालता है और बैर की भावना से एक हाथ बंदूकपर और एक वक्षपर रखता है ।"[३]

चन्दर के सामने बर्टी अपनी प्रेमकहानी कहता है लेकिन स्त्रियों के बारे में उसके विचार इस प्रकार है -- "प्रत्येक लड़की पति खोजती है और प्रत्येक पत्नी प्रेमी ।" जब वह जेनी को मसूरी से ले आता है तो जनम दिन के तोहफे के रूप में उसे प्रेमी देना चाहता है लेकिन जेनी से उसे विवाह करना ही पड़ता है । उसके इन्हीं विचारों से प्रभावित होकर चन्दर सुधापर अविश्वास करने लगता है इसलिए उसे हम खल पात्र की कोटि में भी रख सकते हैं ।

इस प्रकार बर्टी एक मनोविश्लेषणयुक्त पात्र है जो अंततक एक गहरा प्रभाव पाठकोंपर डालता है । उसी की वजह से उपन्यास का नायक कुछ देर के लिए क्यों न हो पथभ्रष्ट हो जाता है ।

गेसू --

सुधा की सहेली गेसू शहर के सबसे मशहूर रईस साबिर हुसेन काजमी की

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ.१०१-१०२ ।

२ वही वही पृ.१०३ ।

३ डा. कैलाश जोशी -'धर्मवीर भारती उपन्यास साहित्य'- पृ.३५ ।

लड़की है। उसकी छोटी बहन का नाम फूल और छोटे भाई का नाम हसरत है। सुधा और गेसू एक दूसरे की अभिन्न सहेलियाँ हैं जिन्हें 'चन्दा और सूरज की जोड़ी' कहते हैं। वे दोनों कॉलेज में शरारतें करती हैं। गेसू शरारतें करने में माहिर है। वह अपनी अध्यापिका को सताती है, सुधा की चोटी डोर से बाँधकर रखती है। कई तरह की शरारतें वह करती रहती है। उसे शायरी करने का भी शौक है।

अपने चचाजात भाई अख्तर से वह बेहद प्यार करती है लेकिन जैसे ही अख्तर की शादी गेसू की छोटी बहन फूल से होती है वह परिस्थिति से समझौता कर लेती है। अख्तरमियाँ के साथ प्रेम और शादी के नाजुक ख्वाब उसने अपने दामन में टाँक दिये थे मगर ये सब सपने वहीं के वहीं रह गये और परिस्थिति से समझौता कर उसने नर्स का पेशा अपना लिया। उसके मन में बदले की भावना जरा भी नहीं है। वह कहती है -- "बदला और नफरत तो मन की कमजोरी को जाहिर करते हैं और फिर बदला मैं लूँ तो किससे ? उससे, दिल की तनहाइयों में मैं जिसके सिजदे पड़ती हूँ। यह कैसे हो सकता है ?" [१]

गेसू यहाँ एक आदर्श प्रेमिका के रूप में चित्रित है। गेसू की ही वजह से उपन्यास का नायक चन्दर, जो अपना देवत्व खो बैठा था, देवता बनने की सीढ़ियाँ फिर से चढ़ने लगता है। इसलिए गेसू का अपना एक अलग महत्त्व इस उपन्यास में हम देखते हैं।

बुआ --

बरेली की रहनेवाली बुआ बिनतीकीमाँ है। उसकी आवाज बहुत कर्कश है और बिनती के जन्म के बाद बिनती के पिता की मौत हो गई इसी वजहसे बिनती की माँ हमेशा उसे डाँटती, फटकारती, गालियाँ देती और बेचारी बिनती अपने भाग्य को कोसती, रोती रहती थी। लेकिन जब उसकी शादी टूट गई तो वह भी स्वाभिमान की खोयी निधि पाकर ढीठ हो गई और प्रत्युत्तर देने लगी जिससे बुआजी और भी गुस्सा हो गई।

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ. २७१।

रूढ़ी परम्पराओं की कायल बुआजी बाहर से घूमकर आयी बिनती को नहाने से पहले चौक में छूने तक नहीं देती है । वह अन्य सभी के साथ जैसे - सुधा, चन्दर, डा.शुक्ला आदि से अच्छा बर्ताव करती है, स्नेह के साथ बातें करती है, लेकिन बिनती को वे हमेशा प्रताड़ित करती है । अपनी बात को सच साबित करनेवाली बुआजी जिद्दी और हठी है । वे कभी हार नहीं मानती है बहस में सबसे ऊँची आवाज निकालकर सभी को चुप करा देती है ।

बुआजी अत्यंत परिश्रमी हैं । सुधा की शादी की आधी तैयारी सिर्फ १५ दिनों में कर वापस आ जाती है । और शहर लौटकर भी वह चैन नहीं लेती -- "चार बोरियाँ गेहूँ उन्होंने साफ करके कोठरी में भरवा दिये । कम-से-कम पाँच तरह की दालें लायी गई थीं । बेसन पीसवाया, दाल दलवाई, पापड़ बनवाये, मैदा छनवायीं, सूजी दरवायी, बरी-मूंगोरी डलवायी, चावल की कचोरियाँ बनवायीं और सबको अलग-अलग गठरी में बाँधकर रख दिया ।" [१]

बुआजी अत्यंत निर्भयी एवं साहसी है । वे यात्रा से ट्रेन से लौट रही थीं तो ,मारवाड़ी उन्हे सेकण्ड क्लास में नहीं ले रहा था तो उस पर जिस साहस के साथ उन्होंने प्रवेश पा लिया वह सराहनीय है । उनकी भाषा अवधी को हम कई जगहोंपर देखते हैं । साथ ही बुआजी व्यवहार का पालन करनेवाली है ।

रूढ़ी-परंपराओं की कायल बुआ अंत तक अपनी बेटी को अपनाने के लिए तैयार नहीं होती जिसका ब्याह डा.शुक्ला और बेटेवालों की वजह से टूट चुका है । बुआजी की भाषा में हम लेखक के भाषा ज्ञान के विस्तार को समझ सकते हैं । इसलिए यह एक अलग ही व्यक्तित्व इस उपन्यास में उपन्यासकार भारती जी ने चित्रित किया है ।

डा.शुक्ला --

डा.शुक्ला गवर्नमेन्ट साइकोलॉजिकल ब्यूरो में काम करते हैं । जब से वे सिनीयर लेक्चरर के रूप में कॉलेज में थे तब से चन्दर की परिस्थिति को जानते थे और

---

१ डा.धर्मवीर भारती --'गुनाहों का देवता'- पृ.१७१ ।

उसकी मदद करते थे। बाद में तो उन्होंने उसे अपने बेटे से बढ़कर ही माना था। उसे कभी किसी बात की कमी महसूस होने नहीं दी। उसे वे हमेशा प्रोत्साहन देते रहें।

शुक्लाजी की इकलौती बेटी सुधा के साथ चन्दर हमेशा बातें करता है। वह उसके आने-जानेपर, उठने-बैठने पर कतरब्योंत करता है फिर भी शुक्लाजी उससे कुछ नहीं कहते। उनका चन्दर पर इतना गहरा विश्वास है कि, वे उसपर सुधा की सारी जिम्मेदारी सौंप देते है। पढ़े-लिखे होने के बावजूद भी वे रीति-रिवाजों के, रस्मों के कायल थे। रीति-रिवाजों पर, रूढ़ियों पर लिखना चाहते थे परंतु जब उन्हें खुद ही ठेंस लग जाती है तो वही शुक्लाजी कह उठते है -- "चन्दर, इस महीने-भर में मेरा सारा विश्वास हिल गया। सुधा का विवाह कितनी अच्छी जगह किया गया, मगर सुधा पीली पड़ गई है। कितना दु:ख हुआ देखकर। और बिनती के साथ यह हुआ। यह सचमुच जाति, विवाह सभी परंपराएँ बहुत ही बुरी है। बुरी तरह सड़ गई है। उन्हें तो काट फेंकना चाहिए।"[१] डा.शुक्ला खुद हररोज एक घण्टा पूजापाठ करते थे परंतु साधु संन्यासियों को जबरदस्ती काम में लगाये जाने की तथा मंदिरों की जायदादें जब्त करने की सलाह उन्होंने दे दी थी।

डा.शुक्ला छूत विचार रखनेवाले भी है। सुबह का कच्चा खाना वे चौंके में धोती पहनकर खा लेते है, दिन भर चाहे जो रहे। दिनभर उनसे कई तरह के लोग मिलने आते हैं, कई जगहोंपर उन्हें भोजन करना पड़ता है, परंतु कच्चा खाना वे चौंके में ही खाते हैं।

डा.शुक्ला को अपनी बेटी सुधा से बेहद प्यार है। वे उसकी हर एक बात को मानते हैं, उसकी हर जिद को पूरी करते हैं। उसकी शादी अच्छे लड़के के साथ होने के बावजूद भी सुधा को दु:खी देखकर उन्हें दु:ख होता है। उसकी शादी के बाद वे खुद को अकेला महसूस करते हैं और रूढ़ी परंपराओं के खोखलेपन को स्वीकार कर लेते है। सुधा की मृत्यु के बाद तो वे लगभग टूट-से जाते है। इस प्रकार एक लेक्चरार के रूप में सफल डा.शुक्ला जी 'एक पिता' के रूप में भी सफल है।

---

१ डा.धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ.२५१।

सुधा की मृत्यु के बाद चन्दर को अपने घर में आकर रहने के लिए डा.शुक्ला कहते हैं लेकिन उनके जीवन का उल्हास ही खतम् हो गया है। इस समय की उनकी स्थिति का चित्रण इस प्रकार किया गया है --"डा.शुक्ला छुट्टी लेकर प्रयाग चले आये थे। उन्होंने पूजा-पाठ छोड़ दिया था। उन्हें कभी किसी ने गाते नहीं सुना था। अब वह सुबह उठकर लॉनपर टहलते और भजन गाते -- 'जागहुरी वृषभान दुलारी...' एक ही पंक्ति अलावा वह दूसरी पंक्ति नहीं गाते थे।"[१]

इस प्रकार एक सफल लेक्चरर, एक सफल पिता होते हुए भी डा.शुक्ला रूढ़ी-परंपराओं के चक्र में उलझकर अपनी बेटी को बचाने में असफल होते हैं।

यह सभी सहायक पात्र उपन्यास की घटनाओं को अपने उद्देश्य तक पहुँचाने में सहायता करते हैं। इसलिए मुख्य पात्रों के सहायक, ये पात्र उपन्यास के विकास में महत्वपूर्ण हैं।

गौण पात्र --

कैलाश मिश्र --

कैलाश मिश्र एक कॉमरेड है जो शाहजहाँपूर के प्रसिध्द काँग्रेसी कार्यकर्ता और म्युनिसिपल कमिश्नर श्री.शंकरलाल मिश्र का छोटा भाई है। स्वाभाविक ही वह भी राजनीति का सक्रिय कार्यकर्ता है। उसके कार्य के लिए उसे घूमते रहना पड़ता है। इसी सिलसिले में उसे एक सांस्कृतिक मिशन में ऑस्ट्रेलिया जाने का मौका भी मिलता है। उसका प्रथम परिचय हम उस वक्त पाते हैं जब चन्दर और डा.शुक्ला बरेली के लाठीचार्ज में फँस जाते हैं और उन्हें कैलाश बचाता है। उसी वक्त उसके साहस से पाठक प्रभावित हो जाते हैं। तब से चन्दर और कैलाश एक-दूसरे के मित्र बन जाते हैं। उनका आपसमें पत्र-व्यवहार भी चलता रहता है।

कैलाश का अपने दोस्त चन्दरपर इतना विश्वास है कि, वह उसके भरोसे अपनी पत्नी को छोड़कर रीवाँ चला जाता है। वह चन्दर से कहता है -"अरे यार,

---

१ डा.धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ.३४९।

अब तुमपर इतना अविश्वास नहीं है । अविश्वास करना ही होता, तो ब्याह के पहले ही कर लेते ।" [१]

कैलाश को एक ऐसी लड़की की जीवनसंगिनी के रूप में जरूरत थी कि, "जो मेरे साथ राजनीति का काम करती, मेरी सबलता और दुर्बलता दोनों की संगिनी होती । इसलिए इतनी पढ़ी-लिखी लड़की से शादी की।लेकिन इन्हें धर्म और साहित्य से जितनी रूचि है, उतनी राजनीति से नहीं ।" [२] इतना होनेपर भी वह सुधा को खुश रखने का प्रयास करता है लेकिन उसका दु:खी रूप देख नहीं सकता फिर भी वह कहता है -- मेरी मजबूरी है ।

वह हँसमुख भी है । सुधा को मायके से वापस ले जाते वक्त वह चन्दर से कहता है --"अब जब तुमने लेन-देन का व्यवहार ही निभाया है तो यह बता दो तुम बड़े हो गया छोटे ?"

"क्यों ?"चन्दर ने पूछा ।

"इसलिए कि, बड़े हो तो पैर छू कर जाऊँ और छोटे हो तो रूपया देकर जाऊँ ।" कैलाश बोला ।" [३]

कैलाश अपनी पत्नी से उसकी मौत के वक्त मिल भी न पाया । सुधा उससे माफी माँगना चाहती थी, लेकिन वह अपने मिशन में व्यस्त रहा और जल्दी लौट न सका ।

इस प्रकार हम देखते है कि, सुधा के आदर्श प्यार को दिखाने के लिए ही लेखक ने एक माध्यम के रूप में कैलाश की योजना की है ।

रवींद्र बिसरिया --

हिंदी में एम. ए. करनेवाला रवीन्द्र बिसरिया एक कवि है। ठाकुर और चन्दर उपन्यास के आरंभ में ही उसका मजाक उड़ाते हैं तो वह गुस्सा हो जाता है । पहले तो वह कविता सुनाने को तैयार नहीं होता है लेकिन --"ठाकुरसाहब जो

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ. ३०२ ।

२ वही वही पृ. ३०३ ।

३ वही वही पृ. ३२९ ।

बिसरिया को पीछले पाँच सालों से जानते थे, वे अच्छी तरह जानते थे कि, बिसरिया किस समय और कैसे कविता सुनाता है । अत: बोले -"ऐसे नहीं कपूर, आज शाम को आओ । जरा गंगाजी चलें, कुछ बोटींग रहे, कुछ खाना- पीना रहे तब कविता भी सुनना ।" [१]

बिसरिया अत्यंत भावुक है । कविता को पढ़कर ही वह इतना भाव विव्हल हो उठता है कि, कई बार उस वजह से वह परीक्षा में फेल हो जाता है । वह इतना शर्मिला है कि, सुधा को पढ़ाते वक्त वह सिर झुकाकार पढ़ाता है । सुधा कहती है -"मास्टरसाहब बहुत अच्छा पढ़ाते है । और चन्दर, अब हम खूब बात करते है उनसे, दुनियाभर की और वे बस् हमेशा सिर नीचे किए रहते हैं । एक दिन पढ़ते वक्त हम गरी पास में रखकर खाते गये, उन्हें मालूम ही नहीं हुआ ।" [२]

वह हमेशा गंभीर रहता है । उसे हँसी-मजाक पसंद नहीं और मजाक उसे जल्दी समझ में नहीं आता । चन्दर और बिनती ने उसे उसके कविता संग्रह के नाम के बारे में जब खूब चिढ़ाया तो पहले उसके समझ में कुछ नहीं आया लेकिन जैसे ही वह समझ गया तो -"बिसरिया हाथभर आँखे फाड़े दोनों की ओर देखता रहा । उसके बाद वह ज्योंही मजाक समझा, उसका चेहरा लाल हो गया । हैट उठाकर बोला --"अच्छा, आप लोग मजाक बना रहे थे मेरा । कोई बात नहीं, देखूँगा ।" [३]

वह बिनती से अत्यंत श्रध्दा रखता है । उसके लिए बिनती शेक्सपीयर की मिराण्डा, प्रसाद की देवसेना, हार्डे की बीएट्रिक्स, कीटस की फैनी और सुर की राधा से बढ़कर है । लेकिन वही उसका मजाक उड़ा रही है यह देखकर वह गुस्से से बेकाबू होकर चला जाता है । उसने फिर पढ़ाने के लिए भी इन्कार कर दिया ।

बिसरिया अत्यंत भावुक, गंभीर, सहृदय कवि है । लेकिन इस उपन्यास में

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ. ६ ।

२ वही वही पृ. ८३ ।

३ वही वही पृ. २०५ ।

हर कोई उसका मजाक उड़ाता है जिससे उसके दिल को ठेंस पहुँचती है ।

शंकरलाल मिश्र --

शंकरलाल शाहजहाँपूर के प्रसिध्द काँग्रेसी कार्यकर्ता और म्युनिसिपल कमिशनर है । उनकी तीस वर्षों की आयु में उनकी पत्नी की मौत हो गयी है । उन्हें पाँच वर्षों का एक छोटा बेटा है । उन्होंने तय कर लिया है कि,अब वह शादी नहीं करेंगे । सेवाव्रत धारण कर जिंदगी बसर कर देंगे ।

वे रीति-रिवाजों के कायल नहीं है । अपने छोटे भाई की जिद के लिए पढ़ी-लिखी लड़की देख लेते हैं । अत्यंत सादे ढंग से विवाह कराने का वचन देते हैं और डा.शुक्ला को बातों-ही-बातों में इस पर राजी भी करा लेते हैं । उनके मीठे वचन सुनकर डा.शुक्ला भी तैयार हो जाते हैं । उन्हें डा.शुक्ला की बेटी बेहद पसंद आती है लेकिन दुर्भाग्य से उसके अंतिम समय तक वे पहुँच नहीं पाते है । मानो वे बहू की विदाई करने के लिए ही पहुँच जाते हैं ।

इस उपन्यास में उनके चरित्र का ज्यादा विश्लेषण भारती जी ने नहीं किया है लेकिन उनके व्यक्तित्व को दृढ़ता,मजाक से युक्त स्वभाव से पाठक प्रभावित हुए बगैर नही रह सकता है ।

वैसे तो गौण पात्रों का होना या न होना एक ही समझा जाता है परंतु इस उपन्यास में आये गौण पात्र उपन्यास की अंर्तकथाओं के जैसे - बर्टी की कथा, पम्मी की कथा,कैलाश मिश्र की कथा आदि के विकास में सहायक होते है । इसलिए उनके अस्तित्व को नकारा नहीं जा सकता ।

नामनिर्देशित पात्र --

जिन पात्रों का सिर्फ उल्लेखमात्र आया है ऐसे कई पात्र इस उपन्यास में हम देख सकते है । जैसे - शुक्लाजी का ड्रायवर,मालिन,महाराजिन,बर्टी की पहली पत्नी (जिसका नाम नहीं दिया गया है) सार्जेण्ट ,बर्टी की बेटी रोज,पम्मी के नाना टेनाली डिक्रूज,पम्मी के पति,गैसू के पिता साबिर हुसैन काजमी,हसरत और

फूल, गेसू के भाई-बहन, गेसू और सुधा की सहेलियाँ - कामिनी, प्रभा, लीला, राजा कॉलेज की अध्यापिका मिस उमालकर, चन्दर कपूर की सौतेली माँ, उसके चाचाजी, बर्टी की दूसरी पत्नी जेनी आदि। इनमें से कुछ पात्र रोज, फूल आदि उपन्यास के कार्यकलापों में अपना थोड़ा सा योगदान देते है परंतु अन्य पात्र सिर्फ नाममात्र के लिए है। उनके व्यवहारों से उपन्यास की घटनाओं में विशेषा फर्क नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि, धर्मवीर भारती ने अपने उपन्यास में पात्रों का सफलतापूर्वक चरित्र-चित्रण किया है। इस उपन्यास में कई तरह के पात्रों का एक साथ गुंफन किया गया है। प्राय: सारे प्रमुख पात्रों में व्यथित हृदय और अतृप्ति का निवास है। पात्रों के मानसिक द्वंन्द्व को युक्तोचित ढ़ंग से प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक युग को विकृत चेतना को प्रस्तुत करने में उपन्यास सक्षम है। दमित वासना और अतृप्ति को केन्द्र बनाकर ही पात्रों का प्रणयन किया गया है। उपन्यास के मुख्य पात्र सेक्स के सम्बन्ध में अपनी-अपनी पूर्व धारणाएँ लेकर चलते है। इस उपन्यास का मुख्य उद्देश्य 'स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों की परखना' इन पात्रों के माध्यम से सफलता के साथ दर्शाया गया है।

अगर हम प्रत्येक पात्र को यथार्थ, सामाजिक धरातल की कसौटि पर कसकर देखना चाहे तो इसमें हम सिर्फ गेसू को यथार्थ सामाजिक धरातल के अनुकूल पात्र के रूप में देख सकते हैं क्योंकि वही अकेली परिस्थिति से समझौता कर लेती है। उपन्यास के सभी प्रमुख पात्र चन्दर, सुधा, पम्मी आदि कल्पनालोक में विचरण करनेवाले पात्र हैं। चन्दर कुछ देर के लिए पथभ्रष्ट हो जाता है लेकिन वह गिरकर भी सँभल जाता है। सुधा तो आरंभ से अंत तक कल्पनालोक में ही विचरण करती रहती है और आदर्श प्रेम की प्रतिमूर्ति बनकर उसी में खो जाती है। सुधा की जिंदगी को नर्क में धकेल देनेवाला चंदर खुद भी उस आग में जलता रहता है। सुधा सिर्फ चन्दर के कहने पर कैलाश से शादी कर लेती है, लेकिन उसकी मजबूरी यह है कि वह विद्रोह नहीं कर सकती। इसलिए अपनी बरबादी में वह खुद जिम्मेदार नहीं है।

चंदर ही अंशिक रूप से सुधा की बरबादी का जिम्मेवार है। अंशिक रूप से इसलिए कि,वह भी मजबूर था। सुधा की बरबादी की जिम्मेदार है,उस वक्त की परिस्थितियाँ।

बिनती भी आदर्श प्रेमिका है लेकिन साथ ही वह व्यावहारिक दृष्टिकोण को अपनानेवाली है। पम्मी ने खुद ही अपने पैर पर कुल्हाड़ी मार ली है। वह अगर खुदपर नियंत्रण रख पाती तो वह खुद को और उपन्यास के नायक चन्दर को,दोनों को ही बरबादी की खाई में जाने से रोक सकती थी। पम्मी के साथ ही बर्टी भी एक ऐसा पात्र है जो चंदर को अपकर्ष के मार्गपर ले जाता है लेकिन गेसू जैसी आदर्श प्रेमिका चन्दर को वास्तविकता का अहसास दिलाती है और चंदर संभल जाता है।

आलोचकों के अनुसार अगर सुधा आदर्श प्रेमिका है,तो वह प्यार एक से, शादी दूसरे से - ऐसा क्यों करती है ? हम अगर उपन्यास को ध्यान से पढ़े तो हम पाते है कि,सुधा पर यह शादी उसी के प्रेमी के द्वारा थोपी गई है। इसलिए अंत तक वह यद्यपि तन से कैलाश की होती है फिर भी उसे अपना मन नहीं दे सकती, पूर्ण समर्पण भाव उसमें नहीं होता।

इस प्रकार हम देखते हैं कि,इस उपन्यास में उपन्यासकार ने प्रत्येक पात्र का सृजन किसी-न-किसी खास उद्देश्य से किया है। पूरे उपन्यास के पात्रों के चरित्र का विश्लेषण करने के बाद मैं इस निष्कर्ष तक पहुँचा हूँ कि, इस उपन्यास के सभी पात्र उपन्यास में गतिशीलता,रोचकता,प्रभावोत्पादकता लाते हैं और अत्यंत शीघ्रता से उपन्यास को उद्देश्य की ओर अग्रेसर करते हैं। अत्यंत सहज,सुन्दर शैली में उपन्यासकार भारती ने उपन्यास के पात्रो को पाठकों तक पहुँचाया है जो उनके मन-मानस में जा बसते है।